1. जीवन विद्या पीठ की स्थापना हेतु पत्रावली

अभ्युदय संस्थान

(मानव के समस्त आयामों में सर्वतोमुखी समाधान के लिये समर्पित संस्थान)

ग्राम : अछोटी, जिला:दुर्ग (छत्तीसगढ)

(कुम्हारी से कुम्हारी–धमधा मार्ग पर 12 कि0मी0 की दूरी पर स्थित)

पत्रांक:0510 / पत्राशिक्षा / 2008 दिनांक: 10.05.2008

स्रोत
अस्तित्वमूलक
मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

प्रणेता
श्रद्धेय ए0 नागराज जी

सम्पर्क
9300205129, 9301700400

अभियान
- ❖ जीवनविद्या योजना
- ❖ शिक्षा का मानवीयकरण

परिवारमूलक ग्राम स्वराज योजना
मानवीय शिक्षा – संस्कार योजना
मानवीय स्वास्थ्य – संयम योजना
मानवीय उत्पादन – कार्य योजना
मानवीय विनिमय – कोष योजना
मानवीय न्याय – सुरक्षा योजना

विवेक सम्मत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

परिवार मानव
सहअस्तित्वपूर्ण
विश्वमानव परिवार पत्रिका
(हिन्दी – अंग्रेजी मासिक)

प्रति,

माननीय डॉ. रमन सिंह जी,
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
रायपुर

प्रस्तावित वस्तु : मानव चेतना मूल्य शिक्षा के प्रकाश में पत्रकारिता को परिष्कृत करने हेतु कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के अंतर्गत जीवन विद्या पीठ की स्थापना का प्रस्ताव।

आदरणीय महोदय,

भारत सरकार की उच्च शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतु केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आई. आई. टी. दिल्ली में **National Resource Centre for value Education** की वर्ष 2002 में स्थापना के पश्चात् इस दिशा में उल्लेखनीय गति आई है।

सन् 2002 से ही अभ्युदय संस्थान **NRCVEE** के साथ कदम से कदम मिलाकर मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की इंजिनियरिंग शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतू निष्ठापूर्वक प्रयासरत् है। इन सभी प्रयासों से आपका व्यक्तिगत जुड़ाव रहा है तथा समय समय पर हमें आपका आवश्यक प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन उपलब्ध होता रहा है।

इंजिनियरिंग शिक्षा में मिले शानदार परिणामों को देखने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम स्वयं दिनांक 7 नवम्बर 2006 को **NIT** रायपुर आये तथा जीवन विद्या पर व्याख्यान दिया।

उपरोक्त परिणामों से उत्साहित होकर स्कूली शिक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु आपके साथ **6 नवम्बर 07** को बाबा नागराज जी के शुभ सान्निध्य में बैठक सम्पन्न हुई जिसमें आपने यह जिम्मेदारी स्कूली शिक्षा विभाग को सौंपी। स्कूली शिक्षा विभाग में अभी तक 10 आवासीय शिविर सम्पन्न हुए है।

बाबा नागराज जी की प्रेरणा से पिछले 10 वर्षों में लगभग 10.000 लोगों तक जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से संपर्क हुआ है। मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में देश भर के शिक्षा विद्दों एवं मिडिया की निगाहें धीरे–धीरे छत्तीसगढ़ की और आकर्षित हो रही हैं।

समाज में मूल्यों के विकास में शिक्षा एवं मिडिया की सबसे महत्वपूर्ण भागीदारी है। सन् 2007 में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के साथ दो शिविर सम्पन्न हुए, जिसके अच्छे परिणाम दिखाई दिये।

फलतः हमारा प्रस्ताव है कि इस विश्वविद्यालय में जीवन विद्या पीठ की स्थापना शीघ्रातिशीघ्र की जाये। यह पीठ राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता को नये आयाम देगी जिससे राज्य एक नई पहचान लेकर खड़ा होगा। इस महती जिम्मेदारी के लिए हिंदुस्तान समाचार के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री रामशंकर अग्निहोत्री जी ने भी अपनी सहमति प्रदान की है।

इस पीठ हेतु आपकी अनुमति की अपेक्षा है। आशा है कि हमेशा की तरह आपका स्नेह सहयोग मिलता रहेगा।

आपका स्नेहाकांक्षी

(सोम देव)
संयोजक
अभ्युदय संस्थान
जिला–दुर्ग(छत्तीसगढ़)

जीवन विद्या पीठ
(चेतना विकास मूल्य शिक्षा)

उद्देश्य – 1. ज्ञान, विवेक, विज्ञान अर्थात् ज्ञान पक्ष में एकरूपता
2. मूल्य चरित्र नैतिकता में एकरूपता, विशेषकर मीडिया के संदर्भ में
3. प्रबुद्धता संप्रभुता प्रभुसत्ता में एकरूपता
4. मीडिया के संदर्भ में उत्तरदायित्व राष्ट्रबोध

प्रकिया – 1. हर समझदार मानव परिवार में समाधान समृद्धि प्रमाणित होना।
2. लोक न्याय सर्वसुलभ होना।
3. ऊर्जा संतुलन सर्वसुलभ होना।
4. अखण्ड राष्ट्र राष्ट्रीय चरित्र–चेतना विकास कार्य सर्वसुलभ होना।
5. अखण्ड समाज समाज चरित्र चेतना विकास कार्य सर्वसुलभ होना।
6. सार्वभौम व्यवस्था सूत्र अध्ययन अखण्ड राष्ट्र समाज के सर्वसुलभ होना।

अध्ययन का स्त्रोत– अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान रूपी मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद एवं शास्त्र, शिक्षा–संस्कार विधि से विकल्प रूप में प्रस्तुत है।

– उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतू मध्यस्थ दर्शन आधारित प्रबंध, निबंध–सदग्रंथ रहेगा।

– भारत सरकार एवं राज्य सरकार मनसा का अध्ययन स्त्रोत रूप में रहेगा, जो अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में रहेगा।

उपलब्धि – सार्वभौम मानवीय आचरण
सार्वभौम मानवीय शिक्षा
सार्वभौम मानवीय व्यवस्था
सार्वभौम मानवीय संविधान
पत्रकारिता और न्याय
न्यायविद् की भूमिका में पत्रकार
सकारात्मक सूचना तंत्र का विकास

धरती पर मानव परम्परा हेतु हर परिवार के समाधान समृद्धि पूर्वक जीने के लिए उपरोक्त बिंदुओं पर सूत्र व्याख्या आवश्यक है। शिक्षा संस्कार विधि से अध्ययन गम्य होने के लिये यह भी आवश्यक है कि सूत्र व्याख्या, रहस्यवाद एवं सम्प्रदायवाद से मुक्त हों, तर्क पूर्ण हों एवं जीने के व्यवहारिक स्वरूप को स्पष्ट करते हों।

जीवन विद्या पीठ सभी प्रस्तुत प्रस्तावों को उपरोक्त आधार पर अध्ययन करेगा। सर्वशुभ हेतु जांचना एवं जन जन तक पहुंचाना ही पत्रकारिता एवं जनसंचार का दायित्व एवं वैभव है।